शोध प्रस्ताव

शोध कार्य का शीर्षक

भारतीय लोकतंत्र में राजनीतिक दलों का उद्भव एवं विकास

(बहुजन समाज पार्टी के संदर्भ में एक विशेष अध्ययन)

पी-एच. डी. उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध प्रारूप

सामाजिक विज्ञान संकाय (राजनीति विज्ञान)

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

Head
University Department of Political Science
Lalit Narayan Mithila University, Darbhanga

पर्यवेक्षक

डॉ. रविन्द्र कुमार ठाकुर

एसो. प्रो. राजनीति विज्ञान विभाग

एल. एन. जे. कॉलेज झंझारपुर

शोधकर्ता

विक्रम दास

क्रमांक- E2216053

<u>शोध-प्रारूप</u>

पी-एच. डी. उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध-प्रारूप

सामाजिक विज्ञान संकाय (राजनीतिशास्त्र)

ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

शोध कार्य का शीर्षक :-

भारतीय लोकतंत्र में राजनीतिक दलों का उद्‌भव एवं विकास

(बहुजन समाज पार्टी के संदर्भ में एक विशेष अध्ययन)

शोध समस्या का प्राक्कथन:

लोकतंत्र में राजनीतिक दलों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है, भारत में कई राज्य पार्टी और राष्ट्रीय पार्टी है परंतु सत्ता मुख्यतः दो पार्टियों के बीच मे झूलता हुआ नजर आता है। अतः अन्य दलों का उद्‌भव, विकास और भागीदारी को जानना आवश्यक हो जाता है। दूसरा बहुजन समाज के नाम पर बनी पार्टी 'बहुजन समाज पार्टी' द्वारा समाज को एक हद तक सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से सक्षम बनाने के प्रयास के बाद भी 'बहुजन समाज' की समस्या बनी हुई है, इसके कारणों की जांच और 'बहुजन समाज पार्टी' की प्रासंगिकता और पुनरुत्थान की संभावना की खोज के लिये यह शोध अपेक्षित है।

शोध प्रश्न:

- लोकतंत्र की मजबूती व सफल संचालन में राजनीतिक दलों की क्या भूमिका है?
- भारत की सत्ता मुख्यतः दो दलों के बीच क्यों झूलती नजर आ रही है?
- क्या 'बहुजन समाज पार्टी' बहुजन समाज की राजनीतिक भागीदारी को सुदृढ बनाने में सफल रही?
- वर्तमान में 'बहुजन समाज पार्टी' का ग्राफ ऋणात्मक हुआ है, उसके कारणों की जांच, पार्टी की प्रासंगिकता और पुनरुत्थान की क्या संभावना है?

Ramchandra Kr Thakur 15/4/2024

Vikram Dev 15/04/24

शोध का आच्छादन: सार तत्व एवं क्षेत्र

'राजनीति' सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक, ऐतिहासिक तथा भौगोलिक परिस्थितियों की उपज है, जो समाज के हर व्यक्ति में विद्यमान होती है। उपर्युक्त परिस्थितियां व्यक्तियों में समान विचारधारा वाले अलग-अलग समूहों को जन्म देती है। **एडमंड बर्क** के अनुसार यही "समान विचारधारा व समान सिद्धांत वाले लोगों का समूह 'दल' का निर्माण करते हैं"। ये विभिन्न विचारधारा वाले समूहों के हित भी भिन्न- भिन्न होते हैं और अपने हितों की पूर्ति के लिये वे शक्ति अर्जित करना चाहते हैं। परिणामस्वरूप एक दल 'राजनीतिक दल' का रूप धारण कर लेता है। **प्रो. मुनरो** कहते हैं "राज्य की नीति बनाने वाले या बनाने की इच्छा रखने वाले समूह ही राजनीतिक दल है"। राजनीतिक दल का प्रथम लक्ष्य सत्ता प्राप्त करना होता है ताकि वह अपने हितों को पूरा कर सके, दूसरा लक्ष्य अपने दल का विस्तार करना अर्थात अपनी विचारधारा को सही सिद्ध करके अधिकतम लोगों तक पहुँचाना होता है इसके लिए वह समाज में व्याप्त समस्याओं की पहचान व समाधान करने के लिए लगातार प्रयत्नशील रहते हैं।

विचारधारा: मार्टिन सेलिगर अपनी पुस्तक-"*आइडियोलॉजी और पॉलिटिक्स*" (1976) में लिखते हैं कि विचारधारा, विचारों का समूह, जिसके द्वारा व्यक्ति संगठित सामाजिक कार्य के लक्ष्य तथा साधनों को स्थापित करते हैं, स्पष्ट करते हैं और उसे उचित सिद्ध करते हैं, इस पर ध्यान दिए बगैर कि क्या ऐसा कार्य दी गई सामाजिक व्यवस्था को बनाये रखने, संशोधित करने, उखाड़ने या पुनर्निर्मित करने का लक्ष्य रखता है।

दलों का वर्गीकरण करने से पहले, **विलियम रिकर और शुम्पीटर** के कथन को भी प्रकाश में लाना जरूरी हो जाता है जो एडमंड बर्क के द्वारा 'दल' के लिए दिए गए विचार से असहमत होते हुए कहते हैं कि दल शक्ति के लिए काम करती है विचारधारा के लिए नहीं, विचारधारा केवल दिखावा मात्र है। रिकर और शुम्पीटर के इस विचार को **ओट्टो किरचाइमर 'catch all party'** के सिद्धांत द्वारा सार्थक सिद्ध कर देते हैं, उनका कहना भी है कि विचारधारा सिर्फ दिखावा है, शक्ति प्राप्त करना ही दल का मुख्य उद्देश्य होता है इसलिए वह अलग-अलग दल का समर्थन लेने के लिए तैयार हो जाते है जबकि उनकी विचारधारा परस्पर मेल नहीं खाती।

राजनीतिक दलों का वर्गीकरण- राजनीतिक दलों को मुख्यतः तीन आधारों पर वर्गीकृत किया जाता है-

15/4/2024

15/04/24

(i) विचारधारा के आधार पर

(ii) संरचना के आधार पर

(iii) संख्या के आधार पर

विचारधारा के आधार पर- विचारधारा के आधार पर राजनीतिक दलों को सामान्यतयः दो भागों में विभाजित किया जाता है परंतु कभी-कभी इन दो दलों के बीच का मार्ग अपनाने वाले दल भी देखा जा सकता है जो निम्न प्रकार से है:

(i) वामपंथी

(ii) दक्षिणपंथी

(iii) मध्यममार्गी

संरचना के आधार पर- संरचना के आधार पर राजनीतिक दलों को वर्गीकृत करने का श्रेय **मौरिस डुवर्जर** को जाता है। **मौरिस डुवर्जर** ने अपनी कृति- *"Political Parties: Their Organization and Activity in Modern State"* (1954) में राजनीतिक दलों को चार भागों में विभाजित किया है:

(i) कॉकस(caucas) (ii) ब्रांच(branch) (iii) सेल(cell) (iv) मिलिशिया (militia)

शासन प्रणाली और राजनीतिक दल

शासन के प्रकार चाहे राजतंत्र, तानाशाह, साम्यवाद, गणतंत्र अथवा लोकतंत्र हो राज्य सरकारों के दिशा निर्देश तथा राजनीतिक व्यवस्था के सफल संचालन के लिए राजनीतिक दलों का होना अनिवार्य है। शासन के उपर्युक्त प्रकार में राजनीतिक दल किसी न किसी रूप में विद्यमान होते ही है परंतु **लोकतांत्रिक व्यवस्था** में राजनीतिक दल का विशेष महत्व होता है। **लॉर्ड ब्राइश** तो यहां तक कहते हैं कि "कोई भी स्वतंत्र देश बिना राजनीतिक दल के नहीं रह सकता।"

लोकतंत्र- लोकतंत्र 'डेमोक्रेसी' शब्द का हिंदी रूपांतरण है, डेमोक्रेसी शब्द की उत्पत्ति ग्रीक भाषा के शब्द 'डेमोंस + क्रेशिया' से हुई है जिसका अर्थ है 'लोगों का शासन' लोकतंत्र का एक निश्चित परिभाषा देना कठिन है परंतु अमेरिकी राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन के द्वारा 'गेटिसबर्ग' भाषण के दौरान लोकतंत्र को "जनता का, जनता के द्वारा, जनता के लिए शासन" के रूप में परिभाषित करना सर्वाधिक प्रचलित परिभाषा है। लोकतांत्रिक शासन प्रणाली एकमात्र शासन प्रणाली है जिसमें हर व्यक्ति को एक इकाई के रूप में माना जाता है तथा उसकी समानता, स्वतंत्रता, अधिकार और

Rawindra Kathelem 15/4/2024 Vikram Dev 15/04/24

व्यक्तिगत आत्म सम्मान की रक्षा की जाती है। इन्हीं करणों से दूसरे प्रकार के शासन व्यवस्था में भी समय – समय पर **लोकतंत्र की** मांग होती रहती है। अरब देश में तो लोकतंत्र की स्थापना के लिए 'अरब स्प्रिंग' नाम से आंदोलन भी चलाया गया था परन्तु वह असफल रहा। **डायसी** के अनुसार, "लोकतंत्र ऐसी शासन व्यवस्था है, जिसमें देश का बड़ा हिस्सा शासन करता है"। लोकतंत्र के महत्व को बनाये रखने के लिए संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 2007 में हर वर्ष 15 सितंबर को अंतरराष्ट्रीय लोकतंत्र दिवस मनाने की घोषणा की।

क्षेत्रीय दलों की उत्पत्ति व विकास

देश में आजादी के बाद लोकतांत्रिक व्यवस्था को अपनाया गया परिणामस्वरूप 'समाजवादी पार्टी', 'स्वतंत्र पार्टी', 'साम्यवादी दल' का उद्‌भव हुआ परंतु लगभग तीस वर्षों तक 'एक दल प्रभुत्व' के रूप में कांग्रेस का शासन रहा उसके बाद लगभग तीन दशकों तक गठबंधन सरकार की भूमिका बनी रही इस दौरान भारत सरकार द्वारा अनेकों सराहनीय कार्य जैसे बैंकों का राष्ट्रीयकरण, गरीबी उन्मूलन, सामाजिक आर्थिक समानता व राष्ट्रीय एकजुटता को बनाए रखने संबंधी कई कार्य किए गए परंतु सरकार क्षेत्रीय अपेक्षाओं और आकांक्षाओं को उस हद तक पूरा करने में असमर्थ रही जिसकी मांग वर्षो से चली आ रही थी परिणामस्वरुप क्षेत्रीय दलों का उद्‌भव एवं विकास हुआ वर्तमान में देश पुनः एक दल प्रभुत्व की राजनीति की ओर बढ़ रहा है जिसमें भारतीय जनता पार्टी की सरकार पिछले दो आम चुनाव में पूर्ण बहुमत से अपनी सरकार बना रही है जिसमें अगर हम बिहार और उत्तर प्रदेश की ओर ध्यान दें तो देखते हैं कि बिहार में 2014 के आम चुनाव में एनडीए गठबंधन को 40 में से 39 एवं उत्तर प्रदेश में 80 में से 74 सीटें मिली कुल 113 जो सत्ताधारी पार्टी के 353 सदस्यों में से लोकसभा के 113 सदस्य बिहार और उत्तर प्रदेश से है। 2019 के आमसभा के चुनाव में एनडीए गठबंधन को बिहार में 39 और उत्तर प्रदेश 64 कुल 103 सीटें प्राप्त हुई परंतु यहां के नागरिकों की मूलभूत आवश्यकताएं जैसे रोजगार, शिक्षा और स्वास्थ्य की दृष्टि से दशा दयनीय है अतः जनता का राष्ट्रीय दलों के प्रति मोह भंग होना लाजमी है और क्षेत्रीय दलों की उत्पत्ति व विकास के मुख्य कारण भी है।

बहुजन समाज पार्टी

देश के आजादी से पूर्व एवं आजादी के बाद भारतीय समाज का एक बडा वर्ग जो सदा से शोषित, पीड़ित व वंचित रहा। बाबा साहब अंबेडकर, उनकी पीड़ा से भली-भांति परिचित थे, उन्होंने उनके सामाजिक-आर्थिक कल्याण के लिए संविधान में आरक्षण का प्रावधान किया। बाबा साहब ने

Rajendra Kr. Thakur
15/4/2024

Vikram Deo
15/04/24

उनके उत्थान के लिए इन वर्गों को संगठित, जागरूक एवं शिक्षित करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने अगस्त 1936 में 'Independent Labour Party' की स्थापना की। बाबा साहेब के उद्देश्य को आगे चलकर जगजीवन राम और फिर बाद में काशीराम ने आगे बढ़ाया, काशीराम ने 1978 में बामसेफ (बैकवर्ड्स एंड माइनॉरिटी कम्युनिटीज एम्पलाइज फेडरेशन) की स्थापना की जिसके माध्यम से देश व प्रदेश के नौकरी-पेशा वाले कर्मचारियों को एकत्रित किया उनसे धन जुटा कर बहुजन समाज के हितों में लगाया तत्पश्चात उन्होंने 6 दिसंबर 1981 में DS-4 (दलित शोषित समाज संघर्ष समिति) का गठन किया। काशीराम ने बाबा साहब के राजनीतिक दर्शन को इस रूप में बताया कि उपेक्षितों-पिछडे वर्गों को आसानी से अपनी अस्मिता का बोध हो जाए, वह बहुजन समाज को समझाने में सफल रहे की सरकारी सहायता अनुदान, छात्रवृतियां, रियायतें आदि तो उनका राजनीतिक सामाजिक अधिकार है जिसे संविधान ने उन्हें प्रदान किए हैं। अब काशीराम को बाबा साहब अंबेडकर के इस कथन का आभास हुआ कि- **"सत्ता ही सभी चाभियों की चाभी है"** अतः उन्होंने अति पिछड़ा वर्ग, शोषित, वंचित, गरीब हिंदू और मुसलमान को एक मंच पर लाना आवश्यक समझा इन्हीं वर्गों को उन्होंने **बहुजन समाज** का नाम दिया। अंततः उन्होंने बाबा साहब अंबेडकर के जन्मदिन पर 14 अप्रैल 1984 को **'बहुजन समाज पार्टी'** की स्थापना की और बहुजनों के लिए राजनीति का मार्ग न केवल प्रशस्त किया बल्कि तीन बार सत्ता पर काबिज़ हुए और तीन बार किंग मेकर की भूमिका भी निभाई।

साहित्य पुनर्रावलोकन

लॉर्ड ब्राइस के अनुसार 'कोई भी स्वतंत्र देश बिना राजनीतिक दल के नहीं रह सकता।' राजनीतिक दलों की अपनी-अपनी विचारधारा होती है, विचारधारा को **मार्टिन सेलिगर** ने अपनी रचना- "*विचारधारा और राजनीति*"(1976) में प्रस्तुत किया है। लोकतंत्र में राजनीतिक दलों की अहम भूमिका होती है। अतः राजनीतिक दलों का उद्भव व विकास के कारणों को जानना अतिआवश्यक हो जाता है। राजनीतिक दलों पर अनेक विचारकों ने अपने-अपने मत दिए हैं यहाँ **मॉरिस डुवर्जर** की कीर्ति- "*पॉलीटिकल पार्टी देयर ऑर्गेनाइजेशन एंड एक्टिविटी इन द मॉडर्न स्टेट*"(1954) के आधार पर राजनीतिक दलों के विभाजन को दर्शाया गया है **डॉक्टर गौतम वीर** की पुस्तक "*भारत में राज्यों की राजनीति*"(2009) का भी अध्ययन किया गया है। इसके अतिरिक्त रजनी कोठारी की रचना- "*भारत मे राजनीति*"(दूसरा संस्करण), अनिल कुमार की पुस्तक- "*पोलिटिकल पार्टीज इन इंडिया*"(2011), अजोय बोस की कृति- "*बहन जीः द राइज एंड फॉल ऑफ*

Ravindra Kothekar
15/4/2024

Vikram Das
15/04/24

मायावती'(रिवाइज्ड ऑडिशन 2022) आदि पुस्तकों का अध्ययन इस शोध के लिए उपयोगी है। यह सभी अध्ययन यह जाँचने की उत्सुकता बढ़ा देती है की राजनीतिक दल लोकतंत्र को मजबूत कर रही है या सत्ता प्राप्ति की चाह में लोकतंत्र को कमजोर करने के साथ-साथ राष्ट्रीय भावना को चोट पहुंचा रही है इन्हीं तथ्यों की खोज के दिशा में यह शोध प्रस्तुत है।

ज्ञान के क्षेत्र में योगदान:

उक्त शोध लोकतंत्र में राजनीतिक दलों की भूमिका को जानने की जिज्ञासा में वृद्धि करता है। शासन की लोकतांत्रिक प्रक्रिया के महत्व को जानने के साथ-साथ भारत की राजनीति में बहुजन समाज की भागीदारी को विशेष रूप से संदर्भित करता है और 'बहुजन समाज पार्टी' की उत्पति एवं विकास को समझने का प्रयत्न करता है, जो वर्तमान समय की मांग भी है। यह शोध-कार्य राजनीति विज्ञान और समाजशास्त्र में उपयोगी होने के साथ-साथ छात्रों, शोधार्थियों और सामान्य पाठकों के लिए भी लाभदायक सिद्ध होगा और भविष्य में अपनी प्रासंगिकता को बनाए रखेगा।

अध्ययन पद्धति:

प्रस्तुत शोध कार्य को पूरा करने के लिए प्राथमिक व द्वितीय साधनों के साथ-साथ ऐतिहासिक, भौगोलिक, अनुभविक तथा अन्वेषणात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति का उपयोग किया जाएगा। साक्षात्कार के आधार पर विश्वसनीय तथ्यों का संकलन किया जायेगा और सरकारी प्रतिवेदनों, अभिलेखों के आधार पर शोध से संबंधित महत्वपूर्ण सूचनाओं का संकलन किया जाएगा।

उद्देश्य एवं महत्व:

'लोकतंत्र' शासन की एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें जनता प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से शासन करती है, चुनी हुई सरकार का जनता के प्रति जवाबदेही होती है तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता, समानता व व्यक्तिगत गरिमा का ख्याल रखा जाता है अतः लोकतांत्रिक व्यवस्था का एक विशेष महत्व है और दुनिया मे इसकी मांग भी है। भारत का लोकतंत्र दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है परिस्थितियां चाहे 'एक दल वर्चस्व' की रही हो 'गठबंधन सरकार' की या वर्तमान स्वरूप की, लोकतंत्र ने अपना पैर जमाये रखा है जिसमें राजनीतिक दलों की महत्वपूर्ण भूमिका है। राजनीतिक दलों की उत्तपति व विकास लोकतंत्र की मजबूती के लिये अति आवश्यक प्रतीत होता है। लोकतंत्र को और अधिक मजबूती प्रदान करना तथा राजनीतिक दलों की भूमिका को और अधिक गहनता से जांच करना इस शोध का मुख्य उद्देश्य है।

Ravindra Kumar Nirmalkar 15/4/2024

Vikram Das 15/04/24

परिकल्पना:

- लोकतंत्र में राजनीतिक दलों का उद्‌भव व विकास 'लोकतंत्र' की मजबूती तथा सफल संचालन के लिए आवश्यक है।
- 'राजनीतिक दल' प्रजातंत्र के दलीय व्यवस्था में सरकार और जनता के मध्य एक मजबूत कड़ी के रूप में कार्य करता है।
- बहुजन समाज पार्टी के उदय ने 'बहुजन समाज' की राजनीति में भागीदारी को सुदृढ बनाया है।
- बहुजन समाज पार्टी के वैचारिक द्‌वन्द के कारण गत वर्षों के चुनावों में पार्टी का ग्राफ ऋणात्मक हुआ है।

प्रस्तुत शोध कार्य निम्न कार्य योजना के अनुसार पूरा किया जायेगा-

कार्य योजना

परिचय

अध्याय प्रथम: भारत में राजनीतिक दलों का उद्‌भव एवं विकास

अध्याय द्‌वितीय: भारतीय लोकतंत्र और दलीय राजनीति

अध्याय तृतीय: अस्मिता की राजनीति और राजनीतिक दल

अध्याय चतुर्थ: बहुजनसमाज की राजनीतिक भागीदारी और राजनीतिक दल

अध्याय पंचम: बहुजन समाज पार्टी का समालोचनात्मक अध्ययन

निष्कर्ष एवं सुझाव

Vikram Das
15/04/24

Ravindra Kr. Thelan
15/4/2024

ग्रंथ सूची

प्राथमिक स्रोत:

Election Commission Of India

Https:/www.eci.gov.in

CEO Uttar Pradesh

Https:/ceouttarpradesh.nic.in

State Election Commission Uttar Pradesh

Https:/sec.up.nic.in

बहुजन समाज पार्टी घोषणा पत्र- 2007

बहुजन समाज पार्टी घोषणा पत्र- 2023

द्वितीयक स्रोत

लेख:

गोदरा, प्रेमवीर(2023). भारत में क्षेत्रीय दलों की सरकारें: 2000 से वर्तमान तक के विशेष सन्दर्भ में, प्रकाशन 4(12), 10-13

Gundimeda, Sambaiah (2014). The Bahujan Samaj Party: Between Social Justice and Political Practice, Social Change 44(1), 21-38

नरेंद्र कुमार(2011). Politicization of Caste and Impulsion of politics: Bahujan Samaj Party In Contemporary India, Voice Of Dalit 4(2), 153-160

यादव मुनेश्वर, रामनाथ शर्मा(2023). भारतीय चुनावी राजनीति में लोकतंत्र की प्रासंगिकता, Research Review International Journal of Multidisciplinary 8(7), 126-130

विनोद कुमार(2019). भारत में लोकतंत्र: वर्तमान परिप्रेक्ष्य एवं भविष्य के मायने [17वीं लोकसभा चुनाव के विशेष सन्दर्भ में] International Journal Of All Research Writing 1(2), 16-23

Suri, KC, Carolyn Elliot, David Hundt (2016). Democracy, Governance and Political Parties in India: An Introduction, Studies in Indian Politics 4(1), 1-7

15/4/2024 15/04/24

पुस्तकें:

आरब्लास्टर, अन्थोनी (दूसरा संस्करण 2021) डेमोक्रेसी: रावत पब्लिकेशन

कीर, धनन्जय (2016) डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर; पॉपुलर प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड

कुमार, अनिल (2011) पॉलीटिकल पार्टीज इन इंडिया; Educreation Publishing

कुमार, विवेक (2021) बहुजन समाज पार्टी एवं संरचनात्मक परिवर्तन; Samyak Prakashan

कोठारी, रजनी (दूसरा संस्करण 2013) भारत में राजनीति; Orient Blackswan Pvt. New Delhi

छिब्बर, प्रदीप और राहुल वर्मा (2018) आईडियोलॉजी एंड आईडेंटिटीज; Oxford University Press

डुवर्जर, मॉरिस (1954) पॉलीटिकल पार्टी देयर ऑर्गेनाइजेशन एंड एक्टिविटीज इन द मॉडर्न स्टेट;

दिवाकर, रेखा (2017) पार्टी सिस्टम इन इंडिया; Oxford University Press India

बोस, अजोय (2022) बहन जी: द राइज एंड फॉल ऑफ मायावती; Zunain Books Publication

भुयाँ, दसरथी (2007) रोल ऑफ रीजनल पॉलीटिकल पार्टीज इन इंडिया; Mittal Publication

सरकार, जयाब्रता (2021) पॉलिटिक्स एज सोशल टेक्स्ट इन इंडिया: बहुजन समाज पार्टी इन उत्तर प्रदेश; Routledge India

सेलिगर, मार्टिन (1976) विचारधारा और राजनीति; Allen and Unwin

हसन, जोया (2000) पॉलिटिक्स एंड द स्टेट इन इंडिया; Sage India

हसन, जोया (2004) पार्टीज एंड पार्टी पॉलिटिक्स; Oxford University Press

यादव, योगेंद्र (2020) मेकिंग सेंस ऑफ़ इंडियन डेमोक्रेसी थ्योरी इन प्रैक्टिस; Permanent Black

वीर, गौतम (2009) भारत में राज्यों की राजनीति; Omega Publication

15/4/2024

Head
University Department of Political Science
Lalit Narayan Mithila University, Darbhanga

20.04.24

VIKRAM DAS

20/4/24

MB Unne
20.04.2024

20.4.24